Received: Jan '23
Revised: Feb '23
Accepted: Mar '23

© 2023 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

AN OVERVIEW OF 21ST CENTURY HINDI STORIES
21वीं सदी की हिन्दी कहानियों का अवलोकन

Maya[1] and Dr. Monika Vyas[2]
[1]Research Scholar, Department of Hindi, Tantiya University, Sri Ganganagar
[2]Research Guide, Department of Hindi, Tantiya University, Sri Ganganagar

प्रस्तावित शोध का परिचय

भारतवर्ष में ही सबसे पहले कहानी–लिखित कहानी उत्पन्न हुई, ऐसी मान्यता अधिकांश विद्वानों की है क्योंकि ऋग्वेद में कहानी के बीज मिलते हैं और ऋग्वेद को संसार का प्राचीनतम ग्रन्थ होने का गौरव प्राप्त है। लिपिबद्ध कहानियों की यह परंपरा ऋग्वेद से आरंभ होकर आज तक चली आ रही है। इस प्रकार आधुनिक हिन्दी कहानी के आविर्भाव से पहले कहानी की एक लंबी परंपरा भारतवर्ष में मिलती है। यह परंपरा वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश भाषाओं के साहित्य से होती हुई हिंदी साहित्य तक चली आई है। ऋग्वेद के संवाद सूक्त, उपनिषदों की रूपक कथाएं, रामायण की अन्तर्कथाएं, महाभारत के उपाख्यान, जातक कथाएं, वृहत्कथा, वासवदत्ता, दशकुमारचरित, कादम्बरी, वृहत्कथाश्लोक, कथासरितसागर, वैताल पंचविंशतिका, शुकसप्तति, सिंहासन द्वात्रिंशिका, पंचतंत्र, हितोपदेश, प्राकृत तथा अपभ्रंश में प्राप्त कथाकाव्य, हिंदी के आदिकाल के चारण काव्य तथा मध्यकाल के प्रेमगाथाकाव्यों, वैष्णव वार्त्ताओं और अन्ततः भारतेन्दुकालीन कथात्मक रचनाओं में हिंदी कहानी के आविर्भाव से पूर्व कहानी का विकास क्रम देखा जा सकता है।

आधुनिक हिंदी कहानी का उद्‌भव बीसवीं शताब्दी के प्रथम वर्ष से ही माना जाता है। महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके द्वारा संपादित पत्रिका 'सरस्वती' को इसका श्रेय दिया जाता है। इससे पूर्व भारतेन्दुकाल में जो कथात्मक गद्य साहित्य उपलब्ध होता है, वह कलात्मक रूप से कहानी विधा में नहीं आता। हिंदी कहानियों का प्रारंभ अधिकांश विद्वानों और हिंदी साहित्य इतिहास लेखकों ने एक स्वर से 'सरस्वती' के प्रकाशन से स्वीकार किया है। 'सरस्वती' के प्रारंभिक अंकों में प्रकाशित रचनाओं में हिंदी कहानी की स्वरूप रचना हो रही थी। 'सरस्वती' के माध्यम से अनेक प्रकार के प्रयोग हो रहे थे। 'इन प्रयोगों में शेक्सपीयर के नाटकों के इतिवृत्त के आधार पर वर्णनात्मक शैली में लिखी गई कहानियां, स्वप्न कल्पनाओं के रूप में रचित कहानियां, सुदूर देशों के कल्पनात्मक चरित्रों को लेकर लिखी गई संवेदनात्मक कहानियां, कल्पनात्मक यात्रा वर्णन की कहानियां, आत्मकथात्मक रूप में प्रस्तुत कहानियां, संस्कृत नाटकों की आख्यायिकाएं तथा घटना–प्रधान सामाजिक कहानियां प्रमुख हैं।' इस प्रकार हिंदी कहानी को एक नवीन विधा के रूप में स्थापित करने में 'सरस्वती' पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी के प्रश्न पर विद्वानों में मतभेद है। इस संदर्भ में डॉ. सुरेश सिन्हा ने अपना मत प्रकट करते हुए आरंभिक कहानियों की निम्नलिखित तालिका प्रस्तुत की है–'रानी केतकी की कहानी', 'राजा भोज का सपना', 'अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न', 'इन्दुमती', 'गुलबहार', 'प्लेग की चुड़ैल', 'ग्यारह वर्ष का समय', 'पंडित और पंडितानी', 'दुलाईवाली'। उपर्युक्त तालिका के अतिरिक्त कहीं–कहीं माधव प्रसाद मिश्र कृत 'मन की चंचलता' (1894), तथा माधवराव सप्रे की 'एक टोकरी भर मिट्टी' (1901) आदि कहानियों का भी उल्लेख मिलता है, किंतु अधिकांश विद्वान 'सरस्वती' में प्रकाशित किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती' (1900) को ही प्रथम मौलिक कहानी के रूप में स्वीकारते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मत इस संदर्भ में द्रष्टव्य है–'इनमें यदि मार्मिकता की दृष्टि से भावप्रधान कहानियों को चुनें तो तीन मिलती हैं– 'इन्दुमती', 'ग्यारह वर्ष का समय', और 'दुलाईवाली'। 'इन्दुमती' किसी बंगला कहानी की छाया नहीं है तो हिन्दी की यही मौलिक कहानी ठहरती है। इसके उपरान्त 'ग्यारह वर्ष का समय', और 'दुलाईवाली' का नम्बर आता है।'

प्रारंभिक हिंदी कहानियों में वर्णनात्मकता, स्थूलता, घटनात्मकता, आकस्मिकता और कुतूहलपूर्णता विद्यमान है। इस तरह इन कहानियों में आधुनिक हिंदी कहानी के विकास के लक्षण विद्यमान हैं। प्रेमचन्दपूर्व हिंदी कहानियों में कहानी विधा को सशक्त आधार देने व कलात्मकता की ऊंचाई पर ले जाने का श्रेय चंद्रधर शर्मा गुलेरी कृत 'उसने कहा था' (1912) को जाता है। यह कहानी सृजनात्मकता और रचनात्मकता की अनुपम कहानी है। भाव, संवेदना, शिल्प व उद्देश्य की दृष्टि से भी इस कहानी ने हिंदी कहानी के इतिहास में मील के पत्थर का काम किया।

सन् 1947 में भारत आजाद हुआ। सदियों की गुलामी के बाद भारतीय जनमानस एक नये सवेरे को उल्लासपूर्ण नजरों से देख रहा था। अब उनके सारे सपने और आकांक्षाएं पूरी होने वाली हैं, इसके प्रति आश्वस्त भारतीय जनता नये जोश व नई स्फूर्ति से ओत–प्रोत थी।

कमलेश्वर के शब्दों में– 'देश का वैचारिक पुनर्जन्म हुआ। आजादी केवल राजनीतिक मूल्य के रूप में स्वीकृत नहीं हुई थी, बल्कि विचारों की एक नवक्रांति का सपना भी उससे जुड़ा हुआ है।' इस प्रकार स्वतंत्र भारत में कहानीकारों की जो नई पीढी तैयार हुई उसने हिन्दी कहानी के वस्तु, शिल्प और संचेतना में व्यापक परिवर्तन किए। स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद हिन्दी कहानी क्षेत्र में जो उल्लेखनीय विकास हुए, वे हिंदी कहानी के विभिन्न आंदोलनों की देन हैं। स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद हिन्दी कहानी में कई आंदोलनों का सूत्रपात हुआ। 'नयी कहानी', 'सचेतन कहानी', 'अकहानी', 'सहज कहानी', 'सक्रिय कहानी', 'समानान्तर कहानी' और 'जनवादी कहानी' के नाम से समय–समय पर उठने वाले कहानी–आंदोलनों ने हिन्दी कहानी को नई समृद्धि, दृष्टि और कलात्मक ऊंचाई भी दी है और संकीर्णताओं और स्वार्थों के कारण उसे क्षति भी पहुंचाई है।

प्रस्तावित शोध के सोपान

स्वतंत्रता से पूर्व हिन्दी कहानी में कोई कहानी–आंदोलन नहीं चला था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 'नयी कहानी' के रूप में एक ऐसा कहानी आंदोलन प्रकाश में आया जिसने कहानी के पारंपरिक प्रतिमानों को नकार दिया और अपने मूल्यांकन के लिए नई कसौटियां निर्धारित की। यह स्वाभाविक भी था कि अब नये विचार, नये सपने और नयी राहों का उदय हुआ था। परतंत्रता की पीड़ा से उभरी भारतीय जनता आजादी के उल्लास में एक नये जोश व नये उत्साह से सराबोर थी। अब नये प्रकार की चुनौतियां थी। आजाद हिन्दुस्तान को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर करना व सदियों से गुलाम भारतीयों को हीन भावना से उबारकर एक नये आत्मविश्वास से ओत–प्रोत करना। परंतु इन सपनों और आकांक्षाओं की उम्र बहुत कम थी, भारत–पाक विभाजन के फलस्वरूप हिन्दु–मुस्लिम सांप्रदायिक उन्माद ने आजादी की मिठास को कसैला बना दिया था। मानवता को सरेआम नंगा किया गया, इंसानियत का गला दबा दिया गया और मूल्यों व आदर्शों को मौत के घाट उतार दिया गया था। सांप्रदायिकता का जो वहशीपन उन दिनों इन नवस्वतंत्र विभाजित देशों के मध्य सुलग रहा था उसने स्वतंत्रता के बाद की सारी उम्मीदों को धुआं–धुआं कर दिया। ऐसे समय में साहित्यकार जो स्वयं आजादी की बाट जोह रहा था, गहरे तनाव व अवसाद से भर गया।

प्रस्तावित शोध का महत्त्व

नयी कहानी आंदोलन ने हिंदी कहानी में एक नवीन चेतना को जन्म दिया। यह नयी कहानी की लोकप्रियता तथा रचनात्मकता का ही परिणाम है कि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, रघुवीर सहाय, श्रीकांत वर्मा जैसे कवि कहानी लेखन की ओर आकर्षित हुए। नयी कहानी ने कथ्यगत परंपरागत ढांचों को अस्वीकारते हुए नये आयामों की खोज की, वहीं अभिव्यक्ति के स्तर पर नये–नये प्रयोग किए। नयी कहानी ने कहानी के प्लॉट में रेखाचित्र, डायरी, संस्मरण जैसी अनेक विधाओं को समेटा जिससे नयी कहानी में प्रयोगधर्मिता, सांकेतिकता आदि गुणों का उदय हुआ। नयी कहानी की भाषा अकृत्रिम है। यह कोशगत अर्थों से कहीं अधिक व्यापक व गहरे अर्थों को ध्वनित करती है। आंचलिक शब्दों के प्रयोग के साथ–साथ प्रतीकात्मकता, बिंबात्मकता आदि नयी भाषा के अतिरिक्त गुण हैं। परंतु 60 के दशक तक आते–आते यह आंदोलन अनेक प्रकार के अंतर्विरोधों में धंस गया। यह आंदोलन वैचारिक प्रतिबद्धता पर कायम रहने में असफल रहा और पश्चिम के आकर्षण से स्वयं को बचा पाने में नाकाम रहते हुए बुजुर्आ आधुनिकतावाद की वकालत करने लगा। व्यक्तिवादी प्रवृत्तियां अधिक सक्रिय हो गई और उसका व्यापक फलक सिमटकर स्त्री–पुरुष संबंधों की अभिव्यक्ति रह गया। इस प्रकार यह आंदोलन बिखर गया और हिंदी कहानी में एक नये आंदोलन अकहानी आंदोलन का जन्म हुआ।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

1. इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में परिवारिक दृष्टि और सम्बन्ध को उजागर करने का उद्देश्य।
2. इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में सामाजिक जीवन के अनेक रूपों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का उद्देश्य।
3. इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में प्रकृति एवं पर्यावरण प्रदूषणसम्बन्ध को उजागर करने का उद्देश्य।
4. इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में राजनीति व साहित्य केअंतःसंबंध को उजागर करने का उद्देश्य।
5. इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में देश की विभिन्न समस्याओं को उजागर करने का उद्देश्य।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कहानी में जो विमर्श मुख्यतः उभर आये हैं और जिन्होंने कहानी को हथियार के रूप में इस्तेमाल किया है। उनमें स्त्री–विमर्श, दलित–विमर्श तथा आदिवासी–विमर्श मुख्य हैं। दलित रचनाकार स्वानुभूति और सहानुभूति में अंतर करते हैं। वे सवर्ण लेखकों की दलित संदर्भों से जुड़ी कहानियों को दलित लेखन में शामिल नहीं मानते। यहां तक की वे प्रेमचन्द, निराला और नागार्जुन के साहित्य को भी दलित–विमर्श के अंदर नहीं मानते। उनका मानना है कि उनके पास दलित पीड़ा की स्वानुभूति नहीं है क्योंकि वे

नहीं जानते कि दलित का दर्द क्या होता है। दलित–विमर्श पर इक्कीसवीं सदी में अनेक दलित रचनाकार अनुभूति की प्रामाणिकता के साथ कहानी लेखन कर रहे हैं जो न केवल अपनी पीड़ा का ही मार्मिक चित्रण करते हैं अपितु अपने समाज की कमजोरियों को रेखांकित कर उनसे उभरने के लिए भी प्रयत्नशील दिखते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. **अनिता गोपेश**–कित्ता पानी,भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्स्टीटयूशनल एरिया, लोदी रोड़, नयी दिल्ली–110003 पहला संस्करण, 2009
2. **अमरीक सिंह दीप**–एक कोई और, परमेशवरी प्रकाशन, बी–109, प्रीत विहार, दिल्ली–92, प्रथम सं. 2011
3. **अरविन्द कुमार सिंह**–उसका सच, प्रकाशन संस्थान, 4715/21, दयानंद मार्ग, दरियागंज, नयी दिल्ली–02, प्र.सं.2006
4. **अंजु दुआ जैमिनी**–सीली दीवार, अनुभव प्रकाशन, ई–28, लाजपत नगर, साहिबाबाद–201005 प्र. सं. 2002
5. **कुणाल सिंह**–सनातन बाबू का दाम्पत्य, भारतीय ज्ञानपीठ, 18 इन्स्टीटयूशनल एरिया, लोदी रोड़, नयी दिल्ली–110003 पहला संस्करण, 2007